ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 7, Issue 4, April 2017 Impact Factor 5.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

मुगल शैक्षिक संस्थाओं का विकास

डॉ बीरेन्द्र कुमार

ऐसोसिएट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास,

पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय कुशीनगर, उ0प्र0।

इस्लामी शिक्षा के जनक स्वयं पैगम्बर मुहम्मद थे, उन्होंने अरब प्रायद्वीप में विखरे हुए कबाइली समाज को अपनी शिक्षाओं के माध्यम से ही एक जुट कर भाई चारे के रुप में पिरोया। सर्वप्रथम इस्लामी शिक्षा का लक्ष्य मुसलमानों में ज्ञान की वृद्धि कराना था। मुहम्मद साहब के अनुसार ज्ञान प्राप्त करना एक कर्तव्य है और बिना उसके मुक्ति नहीं मिल सकती।[1] प्रत्येक मुसलमान पुरुष और स्त्री के लिये ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य है।[2] शिक्षा का दूसरा लक्ष्य इस्लाम का प्रसार करना था। यह एक धार्मिक कर्तवय समझा जाता था। भारत में इस्लाम का प्रसार शिक्षा के माध्यम से किया गया। मकतबों में बाल विद्यार्थियों को प्रारम्भ से कुरान पढ़ायी जाती थी, जिससे उन्हें इस्लाम के मूल सिद्धान्तों के विषय में जानकारी हो सके।[3]

मुहम्मद साहब के अनुसार शिक्षा से बढ़कर कोई दूसरा उपहार नहीं है, जो माता पिता अपने बच्चों को दे सकें।[4] उनका कहना था कि विद्वान की स्याही, शहीद के रक्त से अधिक पवित्र होती है।[5] शिक्षा का तीसरा लक्ष्य इस्लामी सिद्वान्तों के अनुसार सदाचार की प्रणाली का विकास करना था।[6] इस्लामी शिक्षा का चौथा लक्ष्य भौतिक सुख प्राप्त करना था, जिसका सबसे बड़ा दोष था कि इस प्रकार का लक्ष्य लोगों को उच्च–पद प्राप्त करने के लिए प्रलोभन देता था। यही कारण था कि मुस्लिम शासक विद्यार्थियों को प्रशासन में सिपहसालार,काजी, वजीर आदि पदों पर नियुक्त करते थे।[7]

बहुत से हिन्दुओं ने भी उच्च–पद प्राप्त करने की लालसा में फारसी भाषा का अध्ययन किया और उन्हें ऊँचे पदों पर रखा गया। इस्लामी विजेताओं ने अपने को न्यायायिक ठहराने के लिए शिक्षा की व्यवस्था की। इस्लामी शिक्षा का लक्ष्य राजनैतिक उद्देश्यों और स्वार्थों से प्रेरित था। मुस्लिम शासकों के सामने विदेशी भूमि पर अपनी शासन व्यवस्था, भव्यता और संस्कृति को सुदृढ़ करने की प्रमुख समस्या थी। वे शिक्षा के माध्यम से यह कार्य करना चाहते थे।[8]

मुस्लिम काल में शैक्षणिक कार्य प्रणाली, धर्माचार्यों और रहस्यवादियों के द्वारा नियन्त्रित की जाती थी। यही कारण था कि शिक्षण संस्थान में धार्मिक शिक्षा पर अधिक बल दिया जाता था।[9] हजरत अब्दुल कुहुस गंगोही ने ज्ञानार्जन का लक्ष्य जीवन में अपने कर्तव्यों का पालन करना बताया है। बिना ज्ञान के इस्लाम में वास्तविक आस्था नहीं हो सकती। समस्त ज्ञान का लक्ष्य अल्लाह का प्रेम प्राप्त करना है। इस क्रम में शिक्षा को अल्लाह से जोड़ दिया।[10] फिरोज तुगलक की मृत्यु के बाद दिल्ली सल्तनत का विघटन होने लगा और प्रान्तीय शासक सफल हो गये। तैमूर के आक्रमण से विद्वान प्रन्तीय राजधानियों में चले गये।

दक्षिण भारत में बहमनी राज्य में बहुत से मकतब और मदरसे स्थापित किये गये। अहमदशाह (1422–35) ने गुलबर्गा में एक मदरसा सैयद मुहम्मद गेसू दराज के नाम से खोला जो उस समय के एक विशिष्ट विद्वान थे। इस संस्था के खर्च के लिए कई नगर और गाँव की आय निर्धारित की गयी।[11] महमूद गवाँ ने जो मुहम्मद शाह (1463–82) का वजीर था। एक बड़ा मदरसा बीदर में बनवाया (1472 ई0) जिसके ग्रन्थालय में हजारों पुस्तकें थीं। गाँवों में भी मकतब खोले गये।[12] **बहमनी ससुल्तानों ने अनाथों की ि ाक्षा के लिए भी संस्थाएँ खाली**[13] बीजापुर, गोलकुण्डा, मालवा खानेदश,जौनपुर, मुल्तान, गुजरात और बंगाल शिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे।उसके समय में जौनपुर को 'शीराजे हिन्द' कहा जाता था। जौनपुर साहित्य और कलाओं की उच्च शिक्षा के लिए प्रसिद्ध था। इब्राहीम शर्की (1402–80) के समय

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 7, Issue 4, April 2017 Impact Factor 5.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

में जौनपुर में बहुत से विद्वान थे।[14] मालवा के सुल्तान गयासुद्दीन (469–1500) ने अपनी घर की स्त्रियों को पढ़ाने के लिए अध्यापिकाओं की नियुक्ति की।[15] बंगाल में हुसैन शाही शासकों ने हिन्दू और मुस्लिम शिक्षा के प्रसार में अधिक योगदान दिया। उन्होंने शैक्षणिक संस्थाएँ खोली और उन्हें सरकार से अनुदान मिला।[16] सुल्तान नासिर शाह (1282–1325) ने महाभारत का बंगाली भाषा में अनुवाद कराया।[17]

मुगल शासकों ने शिक्षा एवं साहित्य के विकास में सक्रिय और सकारात्मक योगदान किया, मुगल काल में मकतब (प्राथमिक शिक्षा), एवं मदरसा, (उच्च शिक्षा) की व्यवस्था की गई थी। इसी प्रकार मुगल काल में मौलिक एवं अनुदित साहित्य की प्रसिद्ध रचनाएँ उपलब्ध होती है। मुगल शासकों में शिक्षा एवं साहित्य को लेकर दिलचस्पी थी और शिक्षा एवं साहित्य के विकास के लिए उन्होंने अनेक विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया था।

मुगल साम्राज्य की स्थापना के साथ ही भारत में फारसी भाषा साहित्य के एक नए युग का आरंभ हुआ। मुगलोंकी राजभाषा फारसी थी। इस काल में फारसी को दरबार में विशेष स्थान प्राप्त था। मुगल शासन काल के दौरान फारसी भाषा की दो शैलियाँ विकसित हुई–भारतीय शैली एवं ईरानी शैली भारतीय शैली का प्रवर्तक अबुल फजल था।

बाबर

बाबर स्वयं एक विद्वान था। उसकी आत्मकथा 'बाबरनामा' एक अद्वितीय ग्रन्थ है।[18] तुर्की भाषा का यह बहुमूल्ह ग्रन्थ इसकी तुलना सेण्ट आगस्टीन, रुसों, गिबन और न्यूटन की आत्म–कथाओं से की जाती है। बाबर ने एक नवीन काव्य–शैली 'मुबइयान' को प्रारम्भ किया था। लेकिन अपने अल्प शासन काल में शिक्षा के प्रसार के लिये वह कुछ नहीं कर सका। उसके बजीर मकबर अली ने लिखा है कि मकतबों और मदरसों का निर्माण कार्य शुहरते आम' द्वारा किया जाता था।[19] बाबर के दरबार में बहुत से विद्वान थे, जिनमें रव्वादमीर और शेख जैन रव्वाफी प्रमुख थे।[20] बाबर के काल में 'शुहरते आम' नामक विभाग शिक्षा की देख–रेख

का कार्य करता था। बाबर को अपने अल्प शासनकाल के दौरान शिक्षा एवं साहित्य के उत्थान हेतु ज्यादा कुछ करने का अवसर नहीं मिला। लेकिन बाद के मुगल शासकों ने इसके मद्देनजर सक्रिय सहयोग किया।

हुमायुँ

हुमायुँ ने दिल्ली में एक बड़ा मदरसा बनवाया।[21] (**एडवर्ड्स और गैरेट, पूर्ववत,सिट, पृ0 225)** और शेख हुसैन को उसका प्राचार्य नियुक्त किया।[22] उसने दिल्ली में एक ग्रन्थालय स्थापित किया और शेरशाह के आरामगाह को ग्रन्थालय में परिवर्तित कर दिया।[23] हुमायुँ के मकबरे में भी एक मदरसा खोला गया। वह स्वयं भूगोल,गणित व ज्योतिष में रुचि रखता था। शेरशाह ने नरनौल में एक मदररसा खोलाउसमें हिन्दू भी शिक्षा प्राप्त कर सकते थे।[24] हुमायुँ के बाद अकबर ने शिक्षा के प्रसार के लिए कार्य किया।[25]

हुमायुँ भी शिक्षा के विकास में दिलचस्पी लेता था। इसके मद्देनजर हुमायूँ ने दिल्ली में माहम अनगा के सहयोग से 'मदरसा–ए–बेगम'की स्थापना की थी। हुमायुँ सदैव अपने साथ पुस्तकालय रखता था। हुमायुँ का शासनकाल अस्त–व्यस्त रहा और उसे भी इसके उत्थान हेतु ज्यादा कुछ करने का अवसर नहीं मिला। हुमायुँ गणित, खगोल एवं भूगोल के अध्ययन पर विशेष बल दिया।दिल्ली में उसके द्वारा स्थापित मदरसे में इन्हीं विषयों को लेकर शिक्षा दी जाती थी।

अकबर

यद्यपि अकबर पढ़ा लिखा नहीं था, उसके समय में शिक्षा के सभी क्षेत्र में प्रगति हुई। उसने विद्वानों को सरकार की तरफ से वजीफे और जागीरें दीं। उसने सभी धार्मिक वर्गों के विद्वानों को प्रोत्साहन दिया। उसने अबुल फजल की सलाह से शिक्षा के विस्तार के लिए पाठ्यक्रम और नियमावली बनायी। उसने परम्परागत शिक्षा में सुधार किया और इस सम्बन्ध में

राजकीय आदेश निकाले।[26] अकबर की शिक्षा नीति को उस समय के एक बड़े विद्वान फाथुल्ला शीराजी ने प्रभावित किया। वहशिक्षा के सभी क्षेत्रों में पारंगत था। अबुल फजल का कहना था कि यदि प्राचीन पुस्तकें नष्ट हो गयी हो तो मीर फाथुल्ला शीराजी उसे फिर पूर्ववत कर देगें।[27] बीजापुर के अली आदिलशाह के निमंत्रण परवह शीराजी से दक्षिण भारत आया। अली आदिल शाह की मृत्यु के बाद अकबर ने उसे आमंत्रित किया और सदर के पद पर उसकी नियुक्ति की।[28]

वह अनेक विषयों का ज्ञाता था। परन्तु उसने दर्शन शास्त्र और मकूलात में विशेष योग्यता प्राप्त की थी।[29] तकनिकी शिक्षा के विकास में उसका बहुत योगदान था। उसने बड़ी बन्दूक बनाने में लोहे को पक्का करके उसका उपयोग किया। उसकी रुचि छोटे बालकों को पढ़ाने में थी। अबुल फजल का पुत्र उसका शिष्य था। फाथुल्ला शीराजी ने अनुवाद विभाग के कार्य की देखभाल की। उसने भारत के विद्वानों को अल्लामी दीवानी, सद्र शीराजी और मिर्जा जान की कृतियों का परिचय कराया और उन पुस्तकों को मदरसों के पाठ्क्रम में सम्मिलित किया। इस प्रकार से सिकन्दर लोदी ने जिस परम्परा को प्रारम्भ किया था। अकबर के समय में उसका अधिक विकास हुआ। फाथुल्ला शीराजी ने कारखानों में अपनेप्रयोग किये और उसके द्वारा कारखानों की उत्पादन क्षमता में विकास हुआ। जेसुइट पादरी मोन्सेरेट ने इन कारखनों की प्रशंसा की है।[30] अकबर ने तकनीकी शिक्षा के विकास में व्यक्तिगत रुचि दिखलाई। शिकार के समय भी अकबर अपना कुछ समय लोहार के कारखनों में जाकर बन्दूक आदि बनने की कला का अध्ययन करता था।[31] बर्नियर ने इन कारखानों का बाद में निरीक्षण किया और उनकी सराहना की।[32]

अकबर ने राजधानी में एक बड़े ग्रन्थालय की व्यवस्था की, जिसमें भिन्न–भिन्न विषयों की पुस्तकें रखी गयीं।[33] इस ग्रन्थालय में 24 हजार पुस्तकें थीं, जिनका मूल्य 65 लाख रुपया था। इसने सुन्दर शब्दों को लिखने की कला को प्रोत्साहन दिया। उसके दरबार में बहुत से चित्रकार थे। उसने आगरा, फतेहपुर सीकरी और अन्य स्थानों पर मदरसे बनवाये।[34] उसने

बहुत सी–संस्कृत की पुस्तकों का अनुवाद फारसी भाषा में कराया। उसके समय में हिन्दुओं ने अरबी और फारसी भाषाएँ सीखी। अकबर ने हिन्दुओं के लिए भी विद्यालय स्थाापित किये।[35] इस काल में अकबर ने इस्लामी शिक्षा के साथ–साथ हिन्दू शिक्षा का भी विकास समान रुप से किया।

अकबर ने शिक्षा के विकास के लिए फतेहपुरसीकरी, आगरा, लाहौर आदि अनेक स्थानों पर मकतब व मदरसों का निर्माण करवाया। अकबर के शासनकाल में फारसी को काफी प्रस्रय प्राप्त था। एक फरमान जारी कर अकबर ने गणित एवं खगोल विद्या को अनिवार्य बनाया था, बेसिक शिक्षा प्रणाली में सुधार कर अकबर ने शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयास किया। इन सुधारों के परिणामस्वरूप काफी संख्या में हिन्दुओं ने भी फारसी का अध्ययन किया। मकतबों व मदरसों में भेदभाव नहीं किया जाता था। अकबर द्वारा व्यावसायिक शिक्षा को भी प्रोत्साहन दिया गया। अकबर कालीन कारखानों में वस्तुओं के निर्माण के साथ ही तकनिकी विद्यार्थियों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण (अप्रेन्टिस) की भी व्यवस्था उपलब्ध थी।

जहाँगीर

जहाँगीर स्वयं विद्वान होकर भी शिक्षा का प्रेमी नहीं था।[36] फिर भी उसने विद्वानों को प्रोत्साहन दिया। जहाँगीर को पुस्तकों से प्रेम था। उसने चित्रकला के विकास में बहुत योगदान दिया। जहाँगीरका आदेश था कि यदि किसी धनी व्यक्ति या यात्री की मृत्यू हो जाय और उसका कोई उत्तराधिकारी न हो, तो उसकी सम्पत्ति को राज्य सरकार अधिग्रहण कर लेऔर उस धन को मदरसों के निर्माण और शिक्षा के विस्तार पर खर्च किया जाय।[37] गद्दी पर बैठने के बाद जहाँगीर ने उन मदरसों का जीर्णोद्वार कराया, जिनमें पिछले 30 वर्षों से जानवरों और चिड़ियों का निवास था। उनमें उसने योग्य अध्यापकों को नियुक्त किया।[38]

भाहजहाँ

जहाँगीर और शाहजहाँ ने संगीत, चित्रकला, वास्तुकला के विकास में अपना योगदान दिया,जिसकी प्रशंसा सर टॉमस रो और बर्नियर ने की।[39] शिक्षा प्रणाली में सुधार करने का अधिक प्रयास शाहजहाँ ने नहीं किया।[40] शाहजहाँ ने दिल्ली में जामा मस्जिद के समीप एक मदरसा स्थापित करवाया।[41] और 'दारुल बाकी' नाम के मदरसे की मरम्मत करवाई।[42] शाहजहाँ स्वयं तुर्की भाषा में पारंगत था। उसके शासनकाल में एक प्रसिद्ध गणितज्ञ ने नक्षत्रों की एक सूची प्रस्तुत की और उलुगबेग द्वारा बनाई हुई पहलीसूची में संशोधन किया,जिसका नाम जिज–ए–शाहजहाँनी' रखा।[43] शाहजहाँ ने विद्वानों को संरक्षण दिया। उसके कृपापात्र विद्वानों में चन्द्रभान ब्राह्मण प्रमुख था, जो एक उच्च कोटि का रचनाकार था। उसकी लिखी हुई पुस्तक 'मंशाते ब्राह्मण' विद्यालय के पाठ्क्रम में पश्चात् काल तक पढ़ाई जाती रही।[44] शाहजहाँ ने जिन दूसरे विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया उनके नाम थे– अब्दुल हकीम सियालकोटी, मुल्ला मुहम्मद फाजिल और काजी मुहम्मद असलम।[45] शाहजहाँ की पुत्री जहाँनारा बेगम ने आगरा की जामा मस्जिद के समीप एक मदरसा बनवाया, जो बहुत समय तक प्रसिद्ध रहा।[46]

शाहजहाँ का पुत्र शहजादा दाराशिकोह एक विद्वान था। वह अरबी, फारसी, और संस्कृत भाषाओं का जानकार था। दारा ने उपनिषद्, भगवद्गीता, योगवशिष्ठ और रामायण का अनुवाद फारसी में किया। उसने सूफी मत पर एकटीका प्रस्तुत की।[47] सर विलियम स्लीमैन ने लिखा है कि यदि दारा मुगल सम्राट बना होता तो शिक्षा प्रणाली में आमूल परिवर्तन हुआ होता और भारत की स्थिति बदल गयी होती एवं भारत की बहुत प्रगति हुई होती।[48] शाहजहाँ के समय में फ्रांसीसी यात्री बर्नियर भारत आया था। उसने उस समय की शिक्षा प्रणाली के दोषों को विस्तार से लिखा है। उसने लिखा है कि लोग निर्धन थे और अपने बच्चों को ऊँची

शिक्षा देने में असमर्थ थे। उच्च शिक्षा के लिए शाहजहाँ के काल में राज्य की ओर से कोई प्रोत्साहन नहीं दिया जाता था।[49]

औरंगजेब

शाहजहाँ के बाद औरंगजेब बादशाह बना। उसने बहुत से हिन्दू मन्दिरों और शिक्षण संस्थाओं को ध्वस्त किया और उनके स्थानों पर मस्जिदें, मकतबों और मदरसों का निर्माण कराया।[50] अकबर के विपरीत उसने मात्र इस्लामी शिक्षा को ही प्रोत्साहन प्रदान किया।[51] औरंगजेब के समयसाम्राज्य में सभी मदरसों को व्यवस्थित किया गया। इमाम, मुअजिन और खुतबा पढ़ने वालों की नियुक्ति मस्जिदों में की गयी। नगरों और कस्बों में सभी विद्वानों कोउनकी योग्यता के अनुसार सम्राट की ओर से वजीफे प्रदान किये गये।[52] औरंगजेब धर्मान्ध और संकीर्ण विचारों वाला मुगल सम्राट था। वह तुर्की, अरबी, और फारसी भाषाओं का अच्छा जानकार था। औरंगजेब को कुरान हदीस जबानी याद थी।[53] औरंगजेब ने शिक्षा के विकास के क्रम में मदरसों का निर्माण कार्य करवाया। औरंगजेब द्वारा निर्मित मदरसे में 'मदरसा–ए–रहीमियाँ' प्रमुख है। औरंगजेब शिक्षक एवं छात्रों को आर्थिक सहायता भी प्रदान करता था।औरंगजेब की पुत्री जेबुन्निसा ने दिल्ली में 'बैतुल उलूम' नामक एक विद्यालय की स्थापना की थी, जिसमें अभिजात वर्ग के लोगों के साथ–साथ मध्य वर्गीय लोग भी शिक्षा ग्रहण कर सकते थे।

औरंगजेब ने शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने के उद्देश्य से शिक्षा प्रणाली में सुधार किया। उसने पाठ्यक्रम को और भी अधिक व्यावहारिक बनाया, बहुत से मकतबों और मदरसों की स्थापना की और उनमें इस्लामी शिक्षा के प्रसार के लिए व्यवस्था की।[54] उसके द्वारा स्थापित मदरसा रहीमीया बहुत प्रसिद्ध था। यह शाह अब्दुलरहीम की स्मृति में बनवाया गया,

जो 'फतवाये आलमगीरी के सम्पादक मण्डल के एक सदस्य शाह वलीउल्ला के पिता थे। उसने राज्य के ग्रन्थालय में बहुमूल्य पुस्तकों को रखवाया। बीजापुर की बहुत सी पुस्तकें मँगवायी गई।[55] उसने प्रान्तीय गवर्नरों के निमित्त आज्ञा प्रसारित की कि हिन्दू मन्दिरों और शिक्षा संस्थाओं को नष्ट करके मस्जिदों और मदरसों का निर्माण किया जाय।[56] गुजरात और अवध जैसे शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़े प्रान्तों में शिक्षा प्रसार के लिए औरंगजेब ने विशेष ध्यान दिया। 1678 ई0 में गुजरात के बोहरा सम्प्रदाय की शिक्षा के लिए राज्य की ओर से अध्यापकनियुक्त किये गये। औरंगजेब ने बोहरा सम्प्रदाय के लिए शिक्षा को अनिवार्य कर दिया।[57] आगेउसने आदेश दिया कि बोहरा सम्प्रदाय की शिक्षा की प्रगति के सम्बन्ध में उसे नियमित रुप से सूचित किया जाय।[58] औरंगजेब ने गुजरात में मदरसों के जीर्णोद्धार के लिए राज्य की ओर से धन स्वीकृत किया। अली मुहम्मद खाँ की पुस्तक 'मीराते अहमदी' के अनुसार गुजरात के सद्र अकरामुद्दीन खाँ ने एक मदरसा अहमदाबाद में 1,24 हजार रुपया के व्यय से बनवाया।[59] औरंगजेब ने इस मदरसे के संचालन हेतु दो गाँवों की आय भी प्रदान की। **ये दो गाँव थे– सोन्द्राह, सनोली परगना और सबालीह, करी परगना।**[60] निर्धन और योग्य विद्यार्थियों के सहयोग हेतु 2रु0 वजीफा स्वीकृत किया।[61]

औरंगजेब ने मदरसों के पाठ्यक्रम में किन्हीं ऐसी पुस्तकों को नहीं रखा, जो औरंगजेब के विचारों के प्रतिकूल थीं। उसके समय में शेख मुहीबुल्ला इलाहाबादी की पुस्तकें मदरसों में पढ़ाये जाने के लिएप्रख्यातथीं। औरंगजेब शेख की पुस्तक 'तसविया' से सहमत नहीं था, क्योंकि शेख की मृत्यु हो चुकी थी,सम्राट ने उसके एक शिष्य शेख मुहम्मदी से स्पष्टीकरण माँगा और आदेश किया, क्यों न इस पुस्तक को जला दिया जाय।[62] शेख मुहम्मदी निर्भीक और स्वतन्त्र विचारों वाला था। उसनेउत्तर दिया कि वह सम्राट की इच्छा के अनुसार कार्य नहीं कर सकता।[63] सम्भवतः शेख दारा शिकोह और शेख मुहीबुल्ला का समर्थक था, इसलिए औरंगजेब ने उसका विरोध किया।[64] औरंगजेब ने संगीत और अन्य ललित कलाओं को संरक्षण नहीं दिया।[65] क्योंकि औरंगजेब इन्हें इस्लाम विरोधी मानता था। एक बार जब संगीत की अर्थी

निकाली जा रही थी, तबऔरंगजेब ने कटाक्ष करते हुए कहा कि इसको इतनीगहरी कब्र में दफना दो ताकि ये दोबारा जिन्दा न हो सके।

मकतबों व मदरसों में फारसी भाषा में शिक्षा दी जाती थी। विभिन्न मदरसों में भिन्न–भिन्न शिक्षा दी जाती थी। लखनऊ में स्थित फरहंगी महल नामक मदरसा न्याय की शिक्षा के लिए प्रसिद्ध था। इसी प्रकार स्यालकोट का मदरसा व्याकरण की शिक्षा के लिए प्रसिद्ध था। मुगल काल में छात्रों को तीन प्रकार की उपाधियां प्रदान की जाती थी– तर्क एवं दर्शन के विद्यार्थी को फाजिल, धार्मिक शिक्षा के विद्यार्थी को आमिल एवं साहित्य के विद्यार्थियों को काबिल। मुगल काल में बनारस शिक्षा के लिए विशेष चर्चित था।

औरंगजेब के बाद राजनैतिक कुव्यवस्था फैल गयी, जिससे मुगलों की केन्द्रीय सरकार शिक्षा के प्रसार के लिए कुछ नहीं कर सकी। बहादुर शाह (1707–12 ई0) के समय में दिल्ली में दो या तीन मदरसों की स्थापना हुई थी। नादिरशाह के आक्रमण (1739) से काफी क्षति हुई। वह अपने साथ ग्रन्थालय की खास पुस्तकें ईरान ले गया।[66] शिक्षा के विस्तार के लिए प्रान्तों में धनी वर्ग के व्यक्तियों ने विद्यालय खोले।[67] इस सम्बन्ध में दिल्ली में गाजीउद्दीन का मदरसा उल्लेखनीय है।[68] इस मदरसे के अतिरिक्त दूसरे मदरसे थे, शर्फुद्दौला मदरसा, दिल्ली में रोशन–उद्दीन का मदरसा, फर्रुखाबाद में हसनरजा खाँ का मदरसा, और इलाहाबाद, अहमदाबाद, सूरत, अजीमाबाद, मुर्शिदाबाद औरंगाबाद, हैदराबाद, और कुरनूल में मदरसे खोले गये। कभी–कभी एक स्थान पर मस्जिद, मदरसों और निर्माणकर्ता का मकबरा होता था।[69] जो शिक्षण संस्थाएँ मन्दिरों और मस्जिदों से संलग्न थीं, उन्हें सभी प्रकार की सरकारी सहायता जो पहले उपलब्ध थीं, समाप्त हो गयी। औरंगजेब के कुछ उत्तराधिकारियों ने नाम मात्र की सहायता शिक्षा के प्रसार के लिए दी। लेकिन उसका कोई प्रभाव 18 वीं शताब्दी की शिक्षा व्यवस्था पर नहीं पड़ा।बाद में राजकीय संरक्षण के अभाव एवं जनसाधारण की अरुचि से मदरसे प्रायः विलुप्त हो गये।[70]

1. एo रशीद, सोसाइटी एण्ड कल्चर इन मेडिवल, कलकत्ता, 1969, पृo 150
2. पीo एलo रावत, हिस्ट्री ऑफ इण्डियन एजुकेशन, आगरा, 1956, 84
3. वही, पृo 84
4. वही, पृo 84
5. पीo एलo रावत, पूर्ववत, पृo 84; दृष्टव्य, झाारखण्डे चौबे, मध्य युगीन भारतीय समाज एवं संस्कृति, पृo 495
6. वही, पृo 45
7. एसoएमo जाफर,एजुकेशन, पृo 4
8. पीo एलo रावत, पूर्ववत, पृo 85
9. एo एलo रशीद, सोसाइइटी एण्ड कल्चर इन मिडिवल इण्डिया कलकत्ता, 1969,पृo 150
10. मकतबाते हजरत अब्दुल कुद्दुस गंगोही, पृo 68–95 (अनुवाद एसo एचo असकरी,हजरत अब्दुल कुद्दुस गंगोही, पटना यूनिवर्सिटी, जर्नल,19, पृo 13–14
11. एनo एनo ला, पृo 86
12. वही,पृo 89–90, नदवी,पूर्ववत,पृ060
13. एफo ईo कीथ, पूर्ववत,पृo 113,युसुफ हुसेन, पृo 78
14. युसुफ हुसैन, पूर्ववत, पृo 77, एनo एनo ला, पूर्ववत पृo, 100
15. फरिश्ता, जिल्द 4, पृo 136–37
16. एसo एमo जाफर, एजूकेशन, पृo 67
17. वही, पृo 68–69
18. एडवर्ड्स और गैरेट, मुगल रुल इन इण्डिया, पृo 225, लेनपूल, बाबर,रुलर्स ऑफ इण्डिया सीरिज, पृo 10
19. पीo एलo रावत, पूर्ववत, पृo 88
20. एनo एनo,पूर्ववत,पृo 121–24
21. एडवर्ड्स और गैरेट, पूर्ववत,सिट, पृo 225
22. पीo एलo रावत, पूर्ववत, पृo 88
23. वही, पृo 88
24. एनo एनo ला, पूर्ववत्, पृo 134
25. स्मिथ, अकबर, पृo 22, एडवर्ड्स और गैरेट पूर्ववत, पृo 226
26. एडवर्ड्स एण्ड गैरेट, पूर्ववत, पृo 226, आइने अकबरी, ब्लाकमैन,पृo 278
27. युसुफ हुसैन, पूर्ववत, पृo 84
28. वही, पृo 84
29. (युसुफ हुसैन, पृo 81)
30. फादर मान्सेरेट अकबर के दरबार में 1580 से 1582 तक रहे।
31. अकबरनामा, जिल्द 3,पृ0744
32. (बर्नियर ट्रेवेल्स, पृo 259)
33. एनo एनo ला, पूर्ववत, पृo 139, स्मिथ,अकबर, पृo 423 एडवर्ड्स और गैरट, पूर्ववत, पृo 226–27
34. (एडवर्ड्स और गैरट, पृo 227; एफo ई कीथ, पृo 122
35. (वही, पृo 122)

36. पी0 एल0 रावत,पूर्ववत, पृ0 88
37. एन0 एन0 ला, पूर्ववत, पृ0 174; एफ0 ई कीथ, पूर्ववत, पृ0 128
38. पी0 एल0 रावत,पूर्ववत, पृ0 88–69; एडवर्ड्स और गैरट, पृ0 228; एफ0 ई कीथ, पृ0 124
39. बर्नियर ट्रेवेल्स, पृ0 254–55
40. एफ0 ई कीथ, पूर्ववत, पृ0 122
41. युसुफ हुसैन, पूर्ववत, पृ0 86
42. पी0 एल0 रावत, पूर्ववत, पृ0 89
43. युसुफ हुसैन, पूर्ववत, पृ0 86
44. वही, पृ0 86
45. वही, पृ0 86
46. वही, पृ0 86
47. एन0 एन0 ला, पूर्ववत,पृ0 184–86
48. लीमैन रेम्बल्स एण्ड रिकलेक्शन्स, सम्पादित,स्मिथ ,पृ0 511–13
49. बर्नियर ट्रेवेल्स, पृ0 229; एस0 एम0 जाफर, पृ0 97–98)
50. पी0 एल0 रावत, पूर्ववत, पृ0 90; एफ0 ई कीथ, पृ0 125; एडवर्ड्स और गैरट, पूर्ववत, पृ0 230
51. एफ0 ई0 कीथ, पृ0 125
52. वही, पृ0 125
53. वही, पृ0 126
54. युसुफ हुसैन, पूर्ववत, पृ0 87
55. पी0 एल0 रावत, पूर्ववत, पृ0 90
56. युसुफ हुसैन, पूर्ववत पृ0 87; एफ0 ई0 कीथ, पृ0 125
57. एफ0 ई0 कीथ, पृ0 125
58. वही, पृ0 125
59. युसुफ हुसैन, पूर्ववत, पृ0 87
60. वही, पृ0 87
61. इलियट, जिल्द 1, पृ0 150
62. युसुफ हुसैन, पूर्ववत, पृ0 88
63. मसिरुल उमरा, जिल्द 3, पृ0 606
64. युसुफ हुसैन, पूर्ववत, पृ0 98
65. मनूची जिल्द 2, पृ0 98
66. एफ0 ई0 कीथ, पूर्ववत, पृ0 132; एन0 एन0 ला0, पूर्ववत, पृ0 198
67. युसुफ हुसैन, पूर्ववत, पृ0 89
68. फाँसा, देलही पास्ट एण्ड प्रेजेण्ट, पृ0 64
69. वही, पृ0 64
70. पी0 एल0 रावत, पूर्ववत, पृ0 91–92